बंगाल के नवाब एवं ईस्ट इण्डिया कम्पनी का बढ़ता प्रभुत्व

डॉ० शक्ति कुमार*

मुगल साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों में बंगाल सबसे धनी प्रान्त था और उसे 'भारत का स्वर्ग' कहा जाता था। इसकी सम्पन्नता तथा वैभवशाली होने का कारण इसके गवर्नर थे। 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बंगाल अपने कतिपय गवर्नरों के कारण मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक आकर्षक एवं प्रसिद्ध राज्य बन गया था। वास्तव में, बंगाल स्वर्ग ही था, जबकि भारत में शेष भाग आपसी लड़ाइयों, मराठों के आक्रमणों और जाटों के उपद्रवों से विक्षिप्त थे और उत्तर भारत में नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों के कारण सर्वत्र तबाही और अराजकता का दौर–दौरा था, बंगाल में समग्र रूप से शान्ति बनी रही।

भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना (1600 ई०) के पश्चात् अंग्रेज भारत में अपने व्यापार को उत्तरोत्तर सुदृढ़ और विकसित करते चले गये और 18वीं शताब्दी के द्वितीय दशक में सम्राट फर्रूखसियर से उन्होंने व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करने के प्रयास तीव्र कर दिये। अपने प्रयासों में शीघ्र ही अंग्रेजों को सफलता भी प्राप्त हो गयी। सन् 1717 में मुगल सम्राट फर्रूखसियर ने एक शाही फरमान द्वारा अंग्रेजों को अनेक व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान कर दीं।

मुगल सम्राट तथा बंगाल

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो गया था। अतः कालान्तर में जितने भी मुगल सम्राट हुए, वे प्रशासनिक दृष्टि से अक्षम तथा कमजोर ही सिद्ध हुए। उनकी कमजोरी का लाभ उठाकर अंग्रेज यहाँ व्यापार के माध्यम से अपनी जड़ें जमाने में सक्रिय हो गये। अपने घटते प्रभाव और अंग्रेजों से प्रभावित होकर उन्होंने अंग्रेजों को अनेक व्यापारिक सुविधाएँ प्रदान कीं।

मुगल बादशाह के कमजोर हो जाने के कारण बंगाल के नवाब भी स्वतंत्र होने लगे। वे बंगाल में अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को देखकर चिन्तित हो उठे। वे किसी भी कीमत पर यह नहीं चाहते थे कि भारत के समृद्ध इलाके बंगाल में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़े, किन्तु साथ ही बंगाल में एक ऐसा प्रशासनिक वर्ग भी था, जो व्यक्तिगत लाभ और स्वार्थ हेतु अंग्रेजों की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाने के लिए तैयार था।

पूर्व शोधार्थी वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

1740 ई० में बिहार के नवाब नाजिम अलीवर्दी खाँ ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया और शीघ्र ही सफलता प्राप्त कर बंगाल का नवाब बन गया। अंग्रेज इस समय व्यापार के साथ–साथ सैनिक शक्ति का भी विस्तार करने लगे थे। यद्यपि अलीवर्दी खाँ ने अंग्रेजों पर पैनी दृष्टि रखी, किन्तु उनसे कोई झगड़ा नहीं किया। इसका मुख्य कारण यह था कि अलीवर्दी खाँ यह भली–भाँति समझता था कि अंग्रेज मधुमक्खियों के छत्ते के समान हैं, जिनसे मधु तो मिल सकता है, परन्तु छेड़ने पर वे डंक भी मार सकते हैं। अतः अलीवर्दी खाँ ने बंगाल में अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को कम करने के लिए कोई आवश्यक कार्यवाही नहीं की। 1756 ई० में अलीवर्दी खाँ की मृत्यु हो गई।

ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं बंगाल के नवाब

बंगाल के नवाब अलीवर्दी खाँ के कोई पुत्र न था। अतः उसने अपने जीवनकाल में ही अपनी छोटी पुत्री आमिना बेगम के पुत्र मिर्जा मुहम्मद या सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। अतः अलीवर्दी खाँ की मृत्यु के पश्चात् उसकी छोटी पुत्री का पुत्र सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना। इस समय अंग्रेज बड़ी तीव्रगति से अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। अतः अब सिराजुद्दौला अंग्रेजों के प्रति अत्यधिक सतर्क हो गया।

अंग्रेज और सिराजुद्दौला – नवाब बनते ही सिराजुद्दौला को यह आशंका हो गयी कि कहीं अंग्रेज अपनी शक्ति का विस्तार कर बंगाल को न हड़प लें, अतः सिराजुद्दौला सतर्क हो गया। अंग्रेज भी सिराजुद्दौला के व्यवहार से प्रसन्न नहीं थे। अतः अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के प्रतिद्वन्द्वियों को उसके विरूद्ध भड़काना शुरू कर दिया। अंग्रेज हिन्दू व्यापारियों को भी नवाब के विरूद्ध भड़का कर षड़यन्त्र रचने लगे।

अंग्रेजों ने नवाब के असन्तुष्ट दरबारियों तथा विरोधियों को संरक्षण देना प्रारम्भ कर दिया। अब अंग्रेज मुगल सम्राट से प्राप्त व्यापारिक सुविधाओं का दुरूपयोग करने लगे। वे अपने 'दस्तक' भारतीय व्यापारियों को देने लगे। इस दस्तक के द्वारा व्यापारियों को चुंगी नहीं देनी होती थी। अंग्रेजों की इस नीति से नवाब को चुंगी न मिलने से आर्थिक क्षति पहुँची।

अंग्रेजों ने नवाब को षड़यन्त्रों द्वारा क्षति पहुँचाने के साथ ही बंगाल में किलेबन्दी प्रारम्भ कर दी। जिसका नवाब ने विरोध किया और अंग्रेजों को यह आदेश दिया कि वे बंगाल में किलेबन्दी न करें, किन्तु जब अंग्रेज नहीं माने तो नवाब ने अंग्रेजो को दण्ड देने का निश्चय किया।

कासिम बाजार की कोठी पर आक्रमण – जब अंग्रेजों ने नवाब के आदेश की अवहेलना की तो सिराजुद्दौला ने 24 मई, 1756 ई० को अंग्रेजों की कासिम बाजार की कोठी पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। अंग्रेज गवर्नर ड्रेक तथा अधिकांश

अंग्रेज अपने परिवारों सहित जहाज में बैठकर 'फुल्टा' (Fulta) टापू भाग गए। शेष अंग्रेजों ने होलवेल की अध्यक्षता में दुर्ग की रक्षा करने का निश्चय किया, लेकिन वे असफल रहे और अन्त में उन्हें नवाब के समक्ष आत्मसमर्पण करना पड़ा।

काल कोठरी की घटना—नवाब सिराजुद्दौला ने 146 अंग्रेज कैदियों को दुर्ग की एक अत्यन्त संकुचित एवं अन्धकारमय कोठरी, जो 18 फुट लम्बी तथा 14 फुट 10 इंच चौड़ी थी, में बन्द कर दिया। चूँकि उस समय जून का महीना था और भयंकर गर्मी थी। अतः घुटन के कारण अंग्रेज कैदियों का रात को दम घुट गया। जब सुबह कोठरी खोली गयी, तो 146 कैदियों में 23 ही कैदी जीवित मिले और 123 कैदियों की मृत्यु हो गयी। इस घटना को इतिहास में 'काल कोठरी' की दुर्घटना अथवा 'ब्लैक होल' के नाम से जाना जाता है। काल कोठरी घटना के विषय में विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। कुछ विद्वान इस घटना को सत्य मानते हैं तथा कुछ असत्य, जो भी हो, ऐसा तो अवश्य प्रतीत होता है कि काल कोठरी की घटना घटी तो अवश्य होगी, किन्तु हो सकता है कि उसका वर्णन अतिरंजित करके किया गया हो। नवाब ने बाद में जीवित कैदियों को मुक्त कर दिया और कलकत्ता का नाम अलीनगर रख दिया।

अलीनगर की सन्धि – नवाब द्वारा बंगाल में अंग्रेजों की पराजय की मद्रास में सूचना प्राप्त होते ही एडमिरल वाटसन की अध्यक्षता में एक सेना जलमार्ग द्वारा तथा एक सेना लार्ड क्लाइव की अध्यक्षता में स्थल मार्ग द्वारा बंगाल की ओर भेजी गयी, जिसने शीघ्र ही जनवरी, 1757 ई० में कलकत्ता पर अधिकार कर लिया। अंग्रेजों ने हुगली तथा आस–पास के क्षेत्रों को खूब लूटा। जब नवाब को यह सूचना मिली तो वह पुनः अंग्रेजों को दण्ड देने के उद्देश्य से एक सेना सहित अंगेजों की ओर बढ़ा। दोनों पक्षों के मध्य युद्ध हुआ, किन्तु यह युद्ध अनिर्णयात्मक रहा। अन्त में अंग्रेज और नवाब दोनों ही सन्धि के लिए तैयार हो गए, परिणामस्वरूप 9 फरवरी, 1757 ई० में अलीनगर की सन्धि हुई। इस सन्धि की शर्तें निम्नवत् थीं –

1. नवाब द्वारा अंग्रेजों की छीनी गयी सम्पत्ति, फैक्ट्री तथा किले अंग्रेजों को वापस कर दिए जायेंगे।
2. मुगल बादशाह फर्रूखसियर द्वारा अंग्रेजों को दी गयी सभी सुविधाओं को नवाब ने स्वीकार कर लिया।
3. अंग्रेजों को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में बिना चुंगी दिए व्यापार करने की स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गयी।
4. अंग्रेजों को पुनः अपनी इच्छानुसार कलकत्ते में किलेबन्दी करने की स्वतन्त्रता प्रदान कर दी गयी।
5. अंग्रेजों को कलकत्ता में अपने सिक्के चलाने का अधिकार होगा।

6. दोनों एक–दूसरे के शत्रु को अपना शत्रु समझेंगे तथा युद्ध में एक–दूसरे की सहायता करेंगे।

यद्यपि अलीनगर की सन्धि से अंग्रेजों को व्यापक अधिकार और सुविधाएँ प्राप्त हो गयी थी, किन्तु फिर भी अंग्रेज नवाब के विरूद्ध षड़यन्त्र रचने का कोई मौका नहीं चूके। वास्तव में वे सिराजुद्दौला से शंकित रहते थे और उसे नवाब के पद पर से हटाकर किसी ऐसे व्यक्ति को नवाब बनाना चाहते थे, जो उनके इशारों पर ही काम करे।

अंग्रेज और मीर जाफर – मीर जाफर नवाब सिराजुद्दौला का सम्बन्धी तथा सेनापति था। अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु अंग्रेजों ने मीर जाफर को अपनी ओर मिला लिया। अंग्रेज और मीर जाफर की बीच यह तय हुआ कि मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया जाएगा। नवाब बनने के पश्चात् मीर जाफर अंग्रेजों की सहायता करेगा।

प्लासी का युद्ध – अंग्रेज और मीर जाफर के बीच समझौता होने के पश्चात् अंग्रेज अवसर की तलाश में लग गए। शीघ्र ही उन्होंने अवसर भी तलाश लिया। क्लाइव ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला पर दोषारोपण किया कि उसने अलीनगर की सन्धि का उल्लंघन कर फ्रांसीसियों की सहायता की है। नवाब ने इसे स्वीकार नहीं किया। नवाब का जब तक कोई उत्तर मिलता, उससे पूर्व ही क्लाइव ने अपनी सेना के साथ प्लासी मैदान की ओर कूच कर दिया। मीर जाफर को बंगाल का नवाबी का लालच देकर क्लाइव ने उसे पहले ही अपनी ओर मिला लिया था। इसी तरह राय दुर्लभ से भी अंग्रेजों ने गुप्त समझौता कर लिया था। क्लाइव द्वारा प्लासी की ओर कूच करने की जब सूचना सिराजुद्दौला को मिली तो वह भी अपनी राजधानी से चल पड़ा और प्लासी के मैदान में आ डटा। वास्तव में प्लासी की ओर कूच करने के अलावा सिराजुद्दौला के पास कोई और चारा भी न था। 23 जून, 1757 ई० को अंग्रेज व सिराजुद्दौला की सेना के मध्य प्लासी का युद्ध हुआ। इस घमासान युद्ध में अंग्रेजों से किए गए पूर्व षड़यन्त्रकारी समझौते के कारण राय दुर्लभ और मीर जाफर निष्क्रिय रहे। परिणामस्वरूप सिराजुद्दौला युद्ध के मैदान से मजबूरन भाग खड़ा हुआ, परन्तु वह पकड़ लिया गया। अंग्रेजों ने उसे मुर्शिदाबाद भेज दिया, जहाँ मीर जाफर के पुत्र मीरन ने मुहम्मद बेग के द्वारा उसका वध करवा दिया।

24 जून, 1757 ई० को क्लाइव ने मीर जाफर को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा का नवाब घोषित कर दिया। इस युद्ध में सफलता प्राप्त करने के पश्चात् अंग्रेजों की भारतीय राजनीति पर भी पकड़ उत्तरोत्तर मजबूत होने लगी। अब उनका राजनीतिक क्षेत्र में दिनों–दिन हस्तक्षेप बढ़ता ही गया। अब अंग्रेजों ने नवाब को अपने हाथ की कठपुतली बना लिया। अब वे जिसे चाहते नवाब बना देते थे तथा जिसे चाहते उसे नवाबी से हटा देते थे।

प्लासी के युद्ध का महत्त्व – राजनीतिक दृष्टि से इस युद्ध का अत्यधिक महत्त्व है। इस युद्ध का अंग्रेज व्यापारियों को राजनीतिक लाभ मिला। अब वे व्यापारी से शासक बन गए। उन्हें इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया कि वे षड़यन्त्र और कुचक्रों द्वारा भारत में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ता और स्थायित्व प्रदान कर सकते हैं। इस युद्ध के पश्चात् अंग्रेजों ने षड़यन्त्र और कुचक्रों की नीति का ही अनुसरण किया और जिसे जब चाहा, तब बंगाल का नवाब बना दिया और जिसे जब चाहा नवाब के पद से उतार दिया। वस्तुतः नवाब अंग्रेजों के इशारों पर काम करते रहे और समृद्ध राज्य बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

मीर जाफर को नवाबी से अपदस्थ करना – मीर जाफर एक अयोग्य शासक था, उसे केवल काँटों का ताज मिला था। बंगाल के शासन प्रबन्ध में क्लाइव बराबर हस्तक्षेप करता रहता था। वह नवाब और उसके अधिकारियों से अपनी इच्छानुसार कार्य करवाता था। नवाब के लिए अपनी नवाबी बरकरार रखने के लिए अब यह आवश्यक हो गया था कि वह क्लाइव के प्रत्येक आदेश का पालन करें।

अंग्रेज और मीर जाफर के बीच हुए समझौते के अनुसार मीर जाफर को 1 करोड़ 70 लाख रूपया युद्ध हर्जाने के रूप में अंग्रेजों को देना था। मीर जाफर ने अंग्रेजों को अनेक उपहार दिए, जिससे उसका राजकोष रिक्त हो गया। मीर जाफर में इतनी क्षमता न थी कि वह रिक्त राजकोष को पुनः भर सके। यद्यपि मीर जाफर ने राजकोष भरने के प्रयास किए, किन्तु असफल रहा। उसने (मीर जाफर ने) डच कम्पनी से भी सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया। वह कम्पनी को समझौते के अनुसार निर्धारित किया गया धन अदा नहीं कर सका, परिणामस्वरूप कम्पनी एवं नवाब के सम्बन्ध शीघ्र ही बिगड़ने लगे। अब अंग्रेजों ने मीर जाफर के स्थान पर उसके दमाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाने की योजना बनाई। अंग्रेजों ने मीर जाफर को मजबूर किया कि वह मीर कासिम को नायब सूबेदार बनाए। मीर जाफर इसके लिए तैयार न था। अतः उसने अपने नवाब के पद को त्याग दिया।

मीर कासिम को नवाब के पद पर आसीन करना – मीर कासिम मीर जाफर की ही तरह बंगाल का नवाब बनने के लिए लालायित था। अतः उसने अंग्रेजों को यह वचन दिया कि वह वर्दमान, मिदनापुर एवं चटगाँव जिलों की जमींदारी अंग्रेजों को देगा। अंग्रेज भी अपने स्वार्थो की पूर्ति चाहते थे, इसलिए जैसे ही मीर जाफर ने नवाब पद से त्याग–पत्र दिया वैसे ही अंग्रेजों ने मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया।

मीर कासिम तथा अंग्रेजों के बीच अनबन – नवाब बनने के उपरान्त ही मीर कासिम ने शीघ्र ही यह अनुभव किया कि भरपूर राजकोष एवं शक्तिशाली सेना का होना अति आवश्यक है। अतः उसने अंग्रेजों को दिए हुए वचनों की पूर्ति तो

की ही, साथ ही अपनी राजधानी में परिवर्तन कर मुंगेर को नयी राजधानी बना दिया। इतना ही नहीं, उसने वहाँ किलेबन्दी भी की। 40,000 हजार सैनिक उसकी रक्षा के लिए नियत किया गए। उसने अंग्रेजों के व्यक्तिगत व्यापार पर कर लगाया, परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने नवाब के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

मीर जाफर और अंग्रेजों के मध्य पुनः समझौता – अंग्रेजों ने मीर कासिम को अपने लिए खतरा समझकर पुनः मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाने की योजना बनाई। मीर जाफर भी पुनः बंगाल का नवाब बनने के लिए लालायित हो उठा। परिणामस्वरूप अंग्रेज और मीर जाफर के मध्य एक सन्धि हो गयी।

अंग्रेजी सेना का मुर्शिदाबाद के लिए प्रस्थान – मीर जाफर से सन्धि करने के पश्चात् अंग्रेज कम्पनी ने 'एडम्स' के नेतृत्व में एक सेना मुर्शिदाबाद की ओर रवाना कर दी। उधर मीर कासिम अंग्रेजों की कार्यवाही का जवाब देने के लिए तैयार था। अतः उसने भी मीरन के सेनापतित्व में मुंगेर से एक सेना रवाना की, परन्तु मार्ग में ही हुए एक युद्ध में मीरन मार डाला गया।

उदयनाला युद्ध – मीरन की मृत्यु के पश्चात् अंग्रेज कम्पनी की सेना और मीर कासिम की सेना के बीच उदयनाला का युद्ध हुआ। इस युद्ध में मीर कासिम बुरी तरह पराजित हुआ।

पटना हत्याकाण्ड – उदयनाला के युद्ध में पराजित होने पर भी मीर कासिम ने धैर्य नहीं खोया। उसने मुंगेर के दुर्ग की रक्षा की पूर्ण व्यवस्था की और पटना की ओर प्रस्थान कर दिया। वहाँ के अंग्रेज गवर्नर ऐलिस से उसका मुख्य झगड़ा था। पटना में उसने कुछ भारतीय और अंग्रेज बन्दियों को कत्ल करवा दिया। यह घटना इतिहास में 'पटना हत्याकाण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है।

मीर कासिम की पराजय और पलायन – अंग्रेज सेना और मीर कासिम के बीच हुए युद्धों में कटवा, मुर्शिदाबाद जिरिया, सूती, उदयनाला और मुंगेर में मीर कासिम को भारी पराजय का सामना करना पड़ा। पराजय के पश्चात् मीर कासिम बंगाल छोड़कर अवध भाग गया, जहाँ उसने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के यहाँ शरण ली।

संयुक्त मोर्चा – अवध पहुँचकर मीर कासिम ने मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय से सहायता की प्रार्थना की। शाह आलम द्वितीय सहायता देने के लिए तैयार हो गया, परिणामस्वरूप अंग्रेज कम्पनी की सेना का सामना करने के लिए मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय, मीर कासिम तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला की सेनाओं का संयुक्त मोर्चा बना।

बक्सर का युद्ध – मीर कासिम, मुगल, सम्राट शाह आलम द्वितीय तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला के निर्मित संयुक्त मोर्चे ने अपनी सेनाओं के साथ पटना की ओर प्रस्थान किया। विद्वानों का अनुमान है कि संयुक्त मोर्चे की सेना में 40 हजार से

60 हजार सैनिक थे। अंग्रेजी कम्पनी की सेना पहले से ही उस संयुक्त मोर्चे की सेना को जवाब देने के लिए तैयार थी। अतः अंग्रेज कम्पनी द्वारा हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में एक सेना भेजी गयी। अंग्रेजी सेना में 70,072 सैनिक तथा 20 तोपें थीं। 23 अक्टूबर, 1764 ई० को मीर कासिम, मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय तथा अवध नवाब शुजाउद्दौला की संयुक्त सेना एवं अंग्रेजी सेना के बीच बक्सर नामक स्थान पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में मीर कासिम वीरता से लड़ा, किन्तु परास्त हुआ। इस प्रकार इस युद्ध में संयुक्त मोर्चे की सेनाओं को पराजय का सामना करना पड़ा। युद्धोपरान्त दोनों पक्षों में इलाहाबाद की सन्धि हुई।

इलाहाबाद की सन्धि – बक्सर युद्ध में हुई अंग्रेजों की विजय के पश्चात् दोनों पक्षों के मध्य 1765 ई० में इलाहाबाद की सन्धि हुई। इस सन्धि की शर्त्तें निम्नलिखित थीं –

1. अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने अंग्रेजों को 50 लाख रूपया देना स्वीकार किया।
2. कडा एवं इलाहाबाद के जिले मुगल बादशाह को दे दिए गए।
3. नवाब ने चुनार अंग्रेजों को दे दिया।
4. मुगल बादशाह ने बंगाल, बिहार एवं उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों को दे दी।
5. अंग्रेजों ने मुगल बादशाह को 26 लाख रूपये वार्षिक पेंशन देना स्वीकार किया।

मीर जाफर को पुनः नवाब के पद पर आसीन करना – अंग्रेजों ने मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब बना दिया। दोनों के मध्य एक सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार, मीर जाफर ने अंग्रेजों को 30 लाख रूपये युद्ध का व्यय और 25 लाख रूपये अंग्रेज सैनिकों को पुरस्कार स्वरूप दिए। साथ ही, मीर जाफर ने यह भी स्वीकार किया कि उसके दरबार में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट रहेगा। एक बार फिर नवाब का खजाना खाली हो गया और वह आर्थिक संकट में फँस गया। इस समस्या से निपटने के लिए जब तक वह कोई निर्णय लेता, उससे पहले 20 फरवरी, 1765 ई० को ही उसकी मृत्यु हो गयी।

नजमुद्दौला – मीर जाफर की मृत्यु के पश्चात् उसका दूसरा पुत्र नजमुद्दौला बंगाल का नवाब बना। यह भी अपने पिता की तरह नाममात्र का नवाब था। वास्तविक शासन सत्ता अंग्रेजों के हाथ में ही थी। परिणामस्वरूप बंगाल में भष्टाचार और कुशासन का प्रभाव बढ़ गया।.

बक्सर के युद्ध का महत्त्व–बक्सर के युद्ध का इतिहास में अत्यधिक महत्त्व है। इस युद्ध में विजय के परिणामस्वरूप अंग्रेजों का बंगाल पर पूर्ण रूप से शासन हो गया। प्रो० के० के० दत्त ने भी इस सम्बन्ध में ठीक ही कहा है कि, 'फरवरी 1765 ई० की सन्धि ने कम्पनी को बंगाल का वास्तविक स्वामी बना दिया था।'

क्लाइव की स्वदेश वापसी – बक्सर युद्ध के पश्चात् नजमुद्दौला बंगाल का नवाब

बना। उसके शासन काल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी सर्वेसर्वा हो गयी। अब बंगाल में भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया। अतः स्थिति को सुधारने के लिए 1765 ई० में क्लाइव को दूसरी बार बंगाल का गवर्नर बनाकर भेजा गया। उसने भारत आते ही समस्याओं को सुलझाना आरम्भ कर दिया। उसने यहाँ आकर कम्पनी के लाभ हेतु अवध के नवाब से सन्धि कर 50 लाख रूपये कम्पनी को हर्जाने के रूप में दिलाने का वचन दिया। मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय से बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त की तथा बंगाल में दोहरा प्रबन्ध लागू किया। सैनिकों की सहायता हेतु क्लाइव कोष की स्थापना हुई। उसने अंग्रेजी सेना को तीन भागों में विभाजित कर दिया। साथ ही सैनिकों को दोहरा भत्ता देना बन्द कर दिया, फलस्वरूप सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। यद्यपि उसने विद्रोह को दबा दिया, किन्तु इंग्लैण्ड में उसके विरोधियों ने क्लाइव की आलोचना की।

1767 ई० में क्लाइव वापस इंग्लैण्ड चला गया। वहाँ पर उसके विरोधियों ने उस पर मुकदमा चलाया। यद्यपि वह इस मुकदमे में निर्दोष सावित हुआ, फिर भी वह अपने प्रति की गयी कार्यवाही से इतना दुःखी हुआ कि 1774 ई० मे उसने आत्महत्या कर ली। क्लाइव के इंग्लैण्ड वापस चले जाने के बाद 1767 ई० में वल्सर्ट को बंगाल का गवर्नर बनाया गया।

सन्दर्भ सूची :–

1. प्रो० राधाकृष्ण शर्मा–कम्पनी कालीन भारत, पृ० 34, गंगा पुस्तकालय, पटना, 1973
2. डॉ० दीनानाथ वर्मा–आधुनिक भारत, पृ० 63, ज्ञानदा प्रकाशन, पटना, 1978
3. प्रो० श्रीनेत्र पाण्डेय–भारत का वृहत्त इतिहास, भाग 2, पृ० 73, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1981
4. डॉ० सरकार एवं डॉ० के० के० दत्त–आधुनिक भारतवर्ष का इतिहास, भाग 2, पृ० 107, इण्डियन प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, प्रयाग, 1968
5. बी० एन० लूणिया–आधुनिक भारत, भाग 1, पृ० 105, कमला प्रकाशन, इन्दौर, 1983
6. डॉ० सरला कुमारी–आधुनिक भारत का सरल इतिहास, पृ० 124, लखनऊ, 1985

~~**~~